खुरपका मुँहपका रोग (एफ. एम. डी.)

तीव्र गति से फैलने वाला वायरस जनित संक्रामक रोग

रोग का फैलाव

हवा के माध्यम से, रोगी पशु एवं इसके सम्पर्क में आने वाले पशु/व्यक्ति, संक्रमित चारे, दाना-पानी, दूध एवं बरतनों से रोग फैल सकता है।

लक्षण

मुँह से लार गिरना

मुँह, मसूड़े व जीभ पर छाले

खुरों के बीच छाले

थन एवं गादी पर छाले

बचाव व उपचार

चार माह से अधिक की आयु वाले पशुओं में छः माह के अंतराल पर टीकाकरण करायें

- घाव में कीड़े पड़ने पर एक भाग फिनायल तथा चार भाग मीठे तेल को मिलाकर घाव पर लगायें
- बीमार पशु का क्रय विक्रय नहीं करें
- उपचार के लिये पशुचिकित्सक से सम्पर्क करें
- रोगी पशुओं को प्रभावित क्षेत्र से बाहर न ले जावें
- रोगी पशु को अलग से रखें एवं उसके चारे-पानी की व्यवस्था भी अलग से करें
- खुर व मुँह को लाल दवा या फिटकरी के घोल से सुबह-शाम धोवें

पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग
स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (पी.जी.आई.वी.ई.आर.)
(राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय)
एन.एच. 11, आगरा रोड़, जामडोली, जयपुर-302031